Toppersnotes
Unleash the topper in you

1st - ग्रेड

अर्थशास्त्र

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

पेपर 2 || भाग - 2

SIERRA INNOVATIONS

Index

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	**बाजार संरचनाएं और मूल्य निर्धारण** ➢ बाजार संरचनाओं का अर्थ, प्रकृति और वर्गीकरण ➢ पूर्ण प्रतियोगिता: विशेषताएँ, मान्यताएँ और सैद्धांतिक ढाँचा ➢ पूर्ण प्रतिस्पर्धा: फर्म का अल्पकालिक संतुलन ➢ संपूर्ण प्रतियोगिता: फर्म और उद्योग का दीर्घकालिक संतुलन ➢ पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत तुलनात्मक आँकड़े: बाजार के झटके और समायोजन तंत्र ➢ एकाधिकार: अवधारणा, विशेषताएँ और प्रकार ➢ एकाधिकार: अल्पावधि और दीर्घावधि में मूल्य और उत्पादन का निर्धारण ➢ मूल्य भेदभाव: डिग्री, शर्तें और कल्याण विश्लेषण ➢ एकाधिकार बाजार: विशेषताएँ, उत्पाद विभेदीकरण और विक्रय लागत ➢ एकाधिकार प्रतियोगिता: अल्पकालिक और दीर्घकालिक संतुलन - चैंबरलिन का मॉडल ➢ अल्पाधिकार: अन्योन्याश्रयता की विशेषताएं और प्रकृति ➢ अल्पाधिकार: गैर-सांठगांठ मॉडल - कुरनोट, बर्ट्रेंड, एजवर्थ, और किंक्ड डिमांड कर्व ➢ अल्पाधिकार: कपटपूर्ण मॉडल - कार्टेल, मूल्य नेतृत्व, और संयुक्त लाभ अधिकतमीकरण ➢ बाजार संरचनाओं की तुलना: दक्षता और कल्याण विश्लेषण ➢ विभिन्न बाजार रूपों के तहत मूल्य और उत्पादन निर्धारण: एकीकृत संश्लेषण और PYQ-केंद्रित सारांश	
2.	**धन और बैंकिंग** ➢ इकाई अवलोकन और अवधारणा ➢ धन का अर्थ, विकास और विशेषताएँ ➢ धन के कार्य ➢ मुद्रा आपूर्ति - अवधारणाएँ और मापन (M1-M4) ➢ धन का परिमाण सिद्धांत - फिशर का समीकरण ➢ धन का परिमाण सिद्धांत - कैम्ब्रिज नकद-शेष दृष्टिकोण ➢ धन की मांग के सिद्धांत –कीनेसियन दृष्टिकोण (तरलता वरीयता सिद्धांत) ➢ धन की मांग के सिद्धांत – फ्राइडमैन का धन का आधुनिक परिमाण सिद्धांत ➢ मुद्रास्फीति - अर्थ और माप ➢ मुद्रास्फीति - प्रकार, कारण और सिद्धांत ➢ मुद्रास्फीति - प्रभाव और नियंत्रण उपाय ➢ फिलिप्स वक्र - मुद्रास्फीति-बेरोजगारी संबंध ➢ वाणिज्यिक बैंकों के कार्य ➢ वाणिज्यिक बैंकों द्वारा ऋण सृजन ➢ केंद्रीय बैंक - कार्य और भूमिका (आरबीआई के संदर्भ में) ➢ केंद्रीय बैंक द्वारा ऋण नियंत्रण - उपकरण और तकनीकें ➢ मौद्रिक नीति और राजकोषीय नीति – उद्देश्य, उपकरण और समन्वय ➢ इकाई-वार एकीकरण और PYQ-उन्मुख संशोधन माइंड मैप	
3.	**राष्ट्रीय आय और सामाजिक लेखांकन** ➢ राष्ट्रीय आय का अर्थ, अवधारणाएँ और महत्व ➢ राष्ट्रीय आय मापने के तरीके: आउटपुट, आय और व्यय दृष्टिकोण ➢ राष्ट्रीय आय के मापन में कठिनाइयाँ और सीमाएँ	

	➢ आय और व्यय का चक्रीय प्रवाह ➢ सामाजिक लेखांकन: अर्थ, संरचना और महत्व ➢ इनपुट-आउटपुट विश्लेषण और सामाजिक लेखांकन में इसकी भूमिका ➢ हरित लेखांकन और सतत विकास संकेतक ➢ राष्ट्रीय आय, आर्थिक विकास और कल्याण के बीच संबंध ➢ राष्ट्रीय आय और नीति आवेदन: राजकोषीय, मौद्रिक और योजना परिप्रेक्ष्य ➢ राष्ट्रीय आय अवधारणाओं, मापन और अनुप्रयोगों का तुलनात्मक विश्लेषण और एकीकरण	
4.	**राष्ट्रीय आय और रोजगार** ➢ राष्ट्रीय आय का अर्थ और अवधारणाएँ ➢ जीडीपी, जीएनपी, एनडीपी और एनएनपी: तुलनात्मक विश्लेषण और अनुप्रयोग ➢ व्यक्तिगत आय, प्रयोज्य आय और प्रति व्यक्ति आय: प्रवाह और माप ➢ राष्ट्रीय आय मापने के तरीके: उत्पाद, आय और व्यय दृष्टिकोण ➢ राष्ट्रीय आय मापन में कठिनाइयाँ और सीमाएँ ➢ नाममात्र बनाम वास्तविक जीडीपी और जीडीपी डिफ्लेटर: उत्पादन का मुद्रास्फीति-समायोजित माप ➢ राष्ट्रीय आय और कल्याण: संबंध, सीमाएँ और वैकल्पिक संकेतक ➢ आय का चक्रीय प्रवाह: दो, तीन और चार क्षेत्र मॉडल ➢ आय का चक्रीय प्रवाह: दो, तीन और चार क्षेत्र मॉडल ➢ रोजगार और आय का शास्त्रीय सिद्धांत ➢ रोजगार और आय का कीनेसियन सिद्धांत ➢ रोजगार के शास्त्रीय और कीनेसियन सिद्धांतों के बीच तुलना ➢ गुणक: अवधारणा, तंत्र और नीति प्रासंगिकता ➢ त्वरक सिद्धांत: अवधारणा, तंत्र और अनुप्रयोग ➢ आईएस-एलएम मॉडल: वस्तु एवं मुद्रा बाजार संतुलन ➢ आईएस-एलएम नीति की प्रभावशीलता और सीमाएँ	
5.	**आर्थिक विकास और कल्याण** ➢ आर्थिक विकास का अर्थ, प्रकृति और दायरा ➢ आर्थिक विकास के निर्धारक: आर्थिक, गैर-आर्थिक और संस्थागत कारक ➢ आर्थिक विकास के सिद्धांत और मॉडल: शास्त्रीय से आधुनिक दृष्टिकोण ➢ विकास का मापन: आय और कल्याण संकेतक ➢ विकास के समग्र संकेतक: पीक्यूएलआई, एचडीआई, एचपीआई और लिंग सूचकांक ➢ कल्याणकारी अर्थशास्त्र और मानव विकास की अवधारणाएँ: पिगौ, पारेतो, और सेन ➢ सतत विकास की अवधारणा: अर्थ, आयाम और संकेतक ➢ सतत विकास लक्ष्य (एसडीजीएस): विकास, संरचना और भारत की प्रगति ➢ खाद्य सुरक्षा और समावेशी विकास: अर्थ, नीतियाँ और चुनौतियाँ ➢ गरीबी, बेरोजगारी और असमानता: अवधारणाएँ, मापन और नीतियाँ ➢ क्षेत्रीय असंतुलन और संतुलित विकास: कारण, सिद्धांत और भारतीय संदर्भ ➢ विकास में मानव पूंजी, स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढांचे की भूमिका	

1 UNIT बाजार संरचनाएं और मूल्य निर्धारण

बाजार संरचनाओं का अर्थ, प्रकृति और वर्गीकरण

I. प्रस्तावना

A. बाजार की अवधारणा

- **बाजार** शब्द का अर्थ आवश्यक रूप से भौतिक स्थान नहीं होता।
- यह किसी भी **व्यवस्था या प्रणाली को संदर्भित करता है** जिसके माध्यम से **खरीदार और विक्रेता वस्तुओं या सेवाओं की कीमत और मात्रा** निर्धारित करने के लिए बातचीत करते हैं ।
  "बाजार संभावित एक्सचेंजों का एक नेटवर्क है जो किसी विशेष संस्था या नियमों के समूह द्वारा चिह्नित होता है।" - चैंबरलिन

II. बाजार संरचना का अर्थ और प्रकृति

A. बाजार संरचना परिभाषित

- बाजार **संरचना से** तात्पर्य बाजार की **संगठनात्मक और प्रतिस्पर्धी विशेषताओं से है जो प्रभावित करती हैं:**

a. **प्रतिस्पर्धा की प्रकृति** .
b. **मूल्य निर्धारण तंत्र** .
c. **आउटपुट निर्धारण** .
d. **दक्षता और कल्याण परिणाम** .

औपचारिक परिभाषा:

"बाज़ार संरचना किसी उद्योग में फर्मों की संख्या और आकार का वितरण, उत्पाद विभेदीकरण की डिग्री और प्रवेश या निकास की आसानी है।" - बैन (1956)

B. बाजार संरचना के निर्धारक / तत्व

सिद्ध	स्पष्टीकरण
1. फर्मों की संख्या	प्रतिस्पर्धा की डिग्री निर्धारित करता है (कई, कुछ, एकल).
2. उत्पाद की प्रकृति	समरूप या विभेदित.
3. मूल्य पर नियंत्रण	पूर्ण → कोई नहीं; एकाधिकार → पूर्ण।
4. प्रवेश और निकास की शर्तें	मुक्त या प्रतिबंधित बाधाएं.
5. बाजार का ज्ञान	पूर्ण या अपूर्ण जानकारी.
6. परस्पर निर्भरता की डिग्री	स्वतंत्र (पीसी) या पारस्परिक निर्भरता (ओलिगोपॉली)।

III. बाजार संरचनाओं के प्रकार (वर्गीकरण)

A. प्रतिस्पर्धा के आधार पर

प्रकार	फर्मों	उत्पाद का प्रकार	मूल्य नियंत्रण	प्रवेश-निकास	उदाहरण
1. पूर्ण प्रतियोगिता	अनेक	सजातीय	कोई नहीं	मुक्त	कृषि बाजारों
2. एकाधिकार	एक	अद्वितीय	पूरा	अवरोधित	रेलवे
3. एकाधिकार प्रतियोगिता	अनेक	विभेदित	सीमित	मुक्त	रेस्तरां, एफएमसीजी
4. अल्पाधिकार	कुछ	सजातीय या विभेदित	पारस्परिक निर्भरता	वर्जित	ऑटो, दूरसंचार
5. द्वैधाधिकार	दो	सजातीय या विभेदित	सामरिक	सीमित	बोइंग और एयरबस

B. वैकल्पिक वर्गीकरण

1. विक्रेताओं की संख्या के आधार पर

- एकल विक्रेता → एकाधिकार
- कुछ विक्रेता → अल्पाधिकार
- अनेक विक्रेता → पूर्ण या एकाधिकार प्रतियोगिता

2. खरीदारों की संख्या के आधार पर
- एकल खरीदार → मोनोप्सनी
- कुछ खरीदार → ओलिगोप्सनी
- कई खरीदार → मांग पक्ष पर पूर्ण प्रतिस्पर्धा

3. उत्पाद समरूपता के आधार पर
- समरूप बाजार: पूर्ण प्रतिस्पर्धा।
- विभेदित बाजार: एकाधिकारवादी, अल्पाधिकारवादी।

4. प्रवेश बाधाओं के आधार पर
- निःशुल्क प्रवेश: पूर्ण, एकाधिकार प्रतियोगिता।
- प्रतिबंधित प्रवेश: एकाधिकार, अल्पाधिकार।

IV. पूर्ण बनाम अपूर्ण प्रतिस्पर्धा (मौलिक विभाजन)

विशेषता	**संपूर्ण प्रतियोगिता**	**अपूर्ण प्रतिस्पर्धा**
फर्मों	बड़ी संख्या	कुछ या एक
उत्पाद	सजातीय	विभेदित
ज्ञान	उत्तम	अपूर्ण
प्रवेश/निकास	मुक्त	वर्जित
मूल्य निर्धारण	बाजार निर्धारित	दृढ़ निश्चयी
मांग की लोच	फर्म के लिए अनंत	फर्म के लिए परिमित
उदाहरण	स्टॉक एक्सचेंज, कृषि	ऑटोमोबाइल, दूरसंचार, एकाधिकार उपयोगिताएँ

V. बाजार संरचनाओं के अंतर्गत बुनियादी अवधारणाएँ

A. मूल्य लेने वाला और मूल्य निर्माता

अवधारणा	स्पष्टीकरण
कीमत लेने वाला	फर्म बाजार मूल्य (पूर्ण प्रतिस्पर्धा) को स्वीकार करती है।
मूल्य निर्माता	फर्म बाजार मांग की सीमा के भीतर मूल्य निर्धारित करती है (एकाधिकार)।

B. फर्म बनाम उद्योग

अवधि	**परिभाषा**	**उदाहरण**
अटल	व्यक्तिगत उत्पादक उत्पादन और मूल्य का निर्णय करता है।	एक कपड़ा मिल
उद्योग	समान वस्तुओं का उत्पादन करने वाली सभी फर्मों का समूह।	कपड़ा उद्योग

VI. बाजार संरचना सातत्य

पृथक श्रेणियों के बजाय एक **स्पेक्ट्रम के रूप में देखते हैं:**

पूर्ण प्रतियोगिता → एकाधिकार प्रतियोगिता → अल्पाधिकार → एकाधिकार
- एक छोर पर: पूर्ण प्रतिस्पर्धा → पूर्ण मूल्य लेना।
- दूसरे पर: एकाधिकार → पूर्ण मूल्य निर्धारण।
- मध्य: अपूर्ण प्रतिस्पर्धा की विभिन्न डिग्री।

VII. बाजार संरचना विश्लेषण के उद्देश्य
1. **मूल्य-उत्पादन संतुलन** निर्धारित करना ।
2. **दक्षता** (आवंटनात्मक एवं उत्पादक) का अध्ययन करना ।
3. **बाजार की शक्ति** और कल्याण का विश्लेषण करना ।
4. **सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता का** आकलन करना (जैसे, एंटी-ट्रस्ट कानून, विनियमन)।
5. **रणनीतिक व्यवहार का** मूल्यांकन करना (विशेषकर अल्पाधिकार के अंतर्गत)।

VIII. सैद्धांतिक आधार

अर्थशास्त्री	**योगदान**	**केंद्र**
ए. मार्शल	पूर्ण प्रतियोगिता मॉडल	स्थैतिक संतुलन
एसी पिगौ	कल्याण और एकाधिकार	कुल भार नुकसान
जोन रॉबिन्सन (1933)	अपूर्ण प्रतिस्पर्धा सिद्धांत	एकाधिकार स्थितियों के तहत मूल्य-उत्पादन
ईएच चेम्बरलिन (1933)	एकाधिकार प्रतियोगिता मॉडल	उत्पाद विशिष्टीकरण
कूर्नोट , बर्ट्रेंड, एडगेवर्थ	अल्पाधिकार मॉडल	रणनीतिक बातचीत
जेएस बैन	प्रवेश और बाजार शक्ति में बाधाएं	औद्योगिक संगठन

IX. विभिन्न संरचनाओं के अंतर्गत दक्षता और कल्याण

बाजार संरचना	आवंटन दक्षता	उत्पादक क्षमता	गतिशील दक्षता	कल्याण प्रभाव
संपूर्ण प्रतियोगिता	अधिकतम	उच्च	कम	इष्टतम कल्याण
एकाधिकार	कम	अप्रभावी	उच्च (नवाचार)	कल्याण हानि
एकाधिकार बाजार	मध्यम	मध्यम	मध्यम	कुछ मृत भार
अल्पाधिकार	चर	कुशल या अकुशल	उच्च क्षमता	मिश्रित प्रभाव

X. PYQ ट्रिगर पॉइंट

1. किसने परिभाषित किया? **जोन रॉबिन्सन (1933)** .
2. बाजार संरचना जहां फर्म मूल्य लेने वाली है? → **संपूर्ण प्रतियोगिता।**
3. भारत में शुद्ध एकाधिकार का उदाहरण? → **भारतीय रेल।**
4. कम विक्रेताओं और परस्पर निर्भरता वाला बाजार? → **अल्पाधिकार.**
5. उत्पाद विभेदीकरण कहाँ होता है? → **एकाधिकार बाजार।**
6. बाजार संरचनाओं का सातत्य किसके द्वारा दिया गया था? → **एडवर्ड चेम्बरलिन.**

XI. सारांश एकीकरण

- **बाजार संरचना** यह निर्धारित करती है कि कीमतें, उत्पादन और मुनाफा कैसे निर्धारित किए जाएं।
- यह फर्मों के **व्यवहारिक आचरण** और **प्रदर्शन को परिभाषित करता है** (बेन का एस.सी.पी. मॉडल)।
- प्रतिस्पर्धा की प्रकृति **शुद्ध प्रतिस्पर्धा (कई फर्म) से लेकर शुद्ध एकाधिकार (एक फर्म)** तक होती है , जिसमें **एकाधिकार प्रतिस्पर्धा और अल्पाधिकार** मध्यवर्ती रूप में होते हैं।

पूर्ण प्रतियोगिता: विशेषताएँ, मान्यताएँ और सैद्धांतिक ढाँचा

I. प्रस्तावना

A. अर्थ

- **पूर्ण प्रतियोगिता** एक आदर्श बाजार स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें **अनेक क्रेता और विक्रेता पूर्ण ज्ञान, उत्पादों की एकरूपता और मुक्त प्रवेश और निकास की** शर्तों के तहत काम करते हैं , जिसके परिणामस्वरूप बाजार में **मूल्य एकरूपता होती है ।**

  "पूर्ण प्रतिस्पर्धा वह बाजार संरचना है जहाँ कोई भी व्यक्तिगत क्रेता या विक्रेता वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता।"
  - ए. मार्शल

II. पूर्ण प्रतियोगिता की मूलभूत मान्यताएँ

स्थिति	स्पष्टीकरण
1. खरीदारों और विक्रेताओं की बड़ी संख्या	कुल उत्पादन में प्रत्येक फर्म का योगदान नगण्य है; व्यक्तिगत निर्णय बाजार मूल्य को प्रभावित नहीं करते हैं।
2. सजातीय उत्पाद	सभी कंपनियाँ एक जैसी वस्तुएँ बेचती हैं → पूर्ण विकल्प। कोई ब्रांड निष्ठा या विभेद नहीं।
3. निःशुल्क प्रवेश और निकास	कोई कानूनी, तकनीकी या वित्तीय बाधा नहीं; सामान्य लाभ के साथ दीर्घकालिक संतुलन सुनिश्चित करता है।
4. पूर्ण ज्ञान	क्रेता और विक्रेता बाजार की स्थितियों, प्रचलित मूल्य और अवसरों से पूरी तरह अवगत होते हैं।
5. कारकों की पूर्ण गतिशीलता	श्रम और पूंजी उद्योगों में स्वतंत्र रूप से गतिशील रहते हैं, जिससे एक समान कारक प्रतिफल सुनिश्चित होता है।
6. परिवहन लागत का अभाव	पूरे बाजार में एक समान मूल्य सुनिश्चित करता है।
और कारकों की पूर्ण विभाज्यता	उत्पादन के निरंतर समायोजन की अनुमति देता है।
8. तर्कसंगत व्यवहार	कम्पनियों का लक्ष्य अधिकतम लाभ कमाना है; उपभोक्ताओं की संतुष्टि अधिकतम करना है।
9. कोई सरकारी हस्तक्षेप नहीं	मूल्य पूरी तरह से मांग और आपूर्ति की बाजार शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है।

III. मान्यताओं के निहितार्थ

पहलू	निहितार्थ
मूल्य निर्धारण	बाजार मूल्य निर्धारित करता है; फर्म इसे स्वीकार करती है।
फर्म का मांग वक्र	पूर्णतया लोचदार (बाजार मूल्य पर क्षैतिज).
लाभ स्तर (दीर्घावधि)	निःशुल्क प्रवेश और निकास के कारण केवल सामान्य लाभ।
संसाधनों का आवंटन	कुशल (एमसी = एआर = पी).
कल्याण	अधिकतम सामाजिक कल्याण (कोई डेडवेट हानि नहीं)।

IV. फर्म और उद्योग के बीच अंतर

पहलू	अटल	उद्योग
अर्थ	व्यक्तिगत उत्पादन इकाई	एक ही वस्तु का उत्पादन करने वाली फर्मों का समूह
मूल्य प्रभाव	कीमत को प्रभावित नहीं कर सकते	संतुलन मूल्य निर्धारित करता है
उत्पादन	कुल आपूर्ति का छोटा हिस्सा	सभी फर्म आउटपुट का कुल योग
उद्देश्य	लाभ अधिकतमीकरण	उद्योग संतुलन (प्रवेश/निकास के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं)

V. पूर्ण प्रतिस्पर्धा का सैद्धांतिक ढांचा

A. किसी फर्म के सामने मांग वक्र की प्रकृति

- पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत, **फर्म का मांग वक्र (AR)** बाजार-निर्धारित मूल्य पर **पूर्णतया लोचदार होता** है (P = AR = MR)।
- यह संकेत करता है:

$$AR = MR = P$$

फर्म प्रचलित बाजार मूल्य पर कोई भी मात्रा बेच सकती है, लेकिन इससे अधिक पर नहीं।

B. उद्योग की मांग और आपूर्ति

- उद्योग **की मांग** नीचे की ओर झुकी हुई है (कुल बाजार मांग)।
- उद्योग **आपूर्ति** वक्र ऊपर की ओर झुका हुआ है (कुल फर्म आपूर्ति)।
- संतुलन **मूल्य** इन दोनों वक्रों के प्रतिच्छेदन पर निर्धारित होता है।

VI. पूर्ण प्रतिस्पर्धा में मूल्य निर्धारण (बाज़ार स्तर)

A. संतुलन की स्थिति

$$D = S$$

या

$$Q_D = Q_S$$

B. स्पष्टीकरण

- संतुलन मूल्य पर:
  - मांग की गई मात्रा = आपूर्ति की गई मात्रा।
  - बाजार साफ हो गया; कोई कमी या अधिशेष नहीं।
- यदि कीमत > संतुलन → अतिरिक्त आपूर्ति → कीमत गिरती है।
- यदि कीमत < संतुलन → अतिरिक्त मांग → कीमत बढ़ जाती है।

चित्रात्मक प्रतिनिधित्व:

- X-अक्ष: मात्रा
- Y-अक्ष: मूल्य
- डी = बाजार मांग, एस = बाजार आपूर्ति।
- प्रतिच्छेद बिंदु E → संतुलन मूल्य P_e और मात्रा Q_e ।

VII. फर्म स्तर पर मूल्य निर्धारण

पहलू	उद्योग	व्यक्तिगत फर्म
मांग वक्र	नीचे झुका हुआ	पूरी तरह से लोचदार
संतुलन की स्थिति	डी = एस	एमआर = एमसी
संतुलन मूल्य	बाजार द्वारा निर्धारित	फर्म द्वारा स्वीकृत
संतुलन आउटपुट	सकल	फर्म का लाभ-अधिकतम उत्पादन

चित्रात्मक स्पष्टीकरण:

- बाजार संतुलन मूल्य P_e देता है ।
- फर्म की AR = MR = P रेखा P_e पर क्षैतिज है ।
- फर्म उत्पादन निर्धारित करती है जहां MR = MC.

VIII. पूर्ण प्रतियोगिता मॉडल का महत्व

परिप्रेक्ष्य	महत्व
सैद्धांतिक बेंचमार्क	अन्य बाजारों की दक्षता मापने के लिए एक आदर्श मानक के रूप में कार्य करता है।
दक्षता मानदंड	आवंटनात्मक एवं उत्पादक दक्षता सुनिश्चित करता है।
मूल्य प्रणाली	यह दर्शाता है कि मुक्त बाजार की ताकतें किस प्रकार कीमतें निर्धारित करती हैं।
कल्याण विश्लेषण	उपभोक्ता या उत्पादक अधिशेष हानि नहीं (पेरेटो इष्टतमता)।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

IX. सीमाएँ / अवास्तविक धारणाएँ

1. पूर्ण ज्ञान और एकरूपता शायद ही कभी विद्यमान होती है।
2. वास्तविक बाजारों में प्रवेश और निकास संबंधी बाधाएं आम हैं।
3. अज्ञानता, विज्ञापन और उत्पाद विभेदीकरण प्रचलित है।
4. सरकारी हस्तक्षेप (कर, विनियमन) प्रतिस्पर्धा को विकृत करते हैं।
5. स्थैतिक मॉडल - नवाचार और प्रौद्योगिकी परिवर्तन की उपेक्षा करता है।
   इसलिए, पूर्ण प्रतिस्पर्धा एक **सैद्धांतिक मानदंड है** , न कि एक अनुभवजन्य वास्तविकता।

X. पूर्ण प्रतिस्पर्धा में दक्षता और कल्याण

प्रकार	**स्थिति**	**नतीजा**
आवंटन दक्षता	पी = एमसी	संसाधनों का इष्टतम वितरण।
उत्पादक क्षमता	एसी न्यूनतम	सबसे कम लागत का उत्पादन.
गतिशील दक्षता	नवाचार प्रोत्साहन	कम (सामान्य लाभ के कारण).
वितरण दक्षता	कोई मृतभार हानि नहीं	अधिकतम सामाजिक कल्याण.

XI. पूर्ण प्रतिस्पर्धा और मूल्य तंत्र

- एक **अदृश्य हाथ** (एडम स्मिथ) के रूप में कार्य करता है।
- कीमतें कमी का संकेत देती हैं और संसाधनों के कुशल उपयोग की ओर मार्गदर्शन करती हैं।
- संतुलन (स्व-समायोजन तंत्र) प्राप्त करने के लिए किसी बाह्य नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है।

XII. PYQ ट्रिगर पॉइंट्स

1. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत, AR = ? → एमआर = पी.
2. फर्म की मांग वक्र आकृति? → क्षैतिज / पूर्णतया लोचदार।
3. संतुलन की स्थिति? → MR = MC.
4. "पूर्ण प्रतिस्पर्धा" शब्द किसने गढ़ा ? **ए. मार्शल.**
5. दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ ही क्यों? → प्रवेश और निकास निःशुल्क ।
6. आवंटन दक्षता कब प्राप्त होती है? → P = MC.
7. उद्योग संतुलन कब प्राप्त हुआ? → सभी फर्में सामान्य लाभ अर्जित करती हैं।

XIII. आलोचनात्मक मूल्यांकन

ताकत:

- शुद्ध बाजार शक्तियों की कार्यप्रणाली की व्याख्या करता है।
- पूर्ण रोजगार और इष्टतम आवंटन सुनिश्चित करता है।
- कोई शोषण नहीं (P = MC = AR = MR).

कमजोरियां:

- ज्ञान और एकरूपता की अवास्तविक धारणाएँ।
- तकनीकी प्रगति या विपणन की कोई गुंजाइश नहीं।
- पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं और रणनीतिक व्यवहार की उपेक्षा करता है।

XIV. सारांश एकीकरण

- **पूर्ण प्रतिस्पर्धा** एक मानक आदर्श का प्रतिनिधित्व करती है जहां **मुक्त प्रवेश, समरूपता और मूल्य-ग्रहण व्यवहार के माध्यम से बाजार दक्षता को अधिकतम किया जाता है** ।
- यह **एकाधिकार, एकाधिकार प्रतियोगिता और अल्पाधिकार** जैसी अन्य अपूर्ण बाजार संरचनाओं की तुलना के लिए **विश्लेषणात्मक आधार बनाता है** ।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा: फर्म का अल्पकालिक संतुलन

I. प्रस्तावना

A. अल्पावधि का अर्थ

- अल्पावधि वह अवधि है जिसमें **उत्पादन का कम से कम एक कारक निश्चित होता है** (जैसे, संयंत्र का आकार, मशीनरी) **।**
- कंपनियां केवल श्रम या कच्चे माल जैसे **परिवर्तनशील इनपुट में परिवर्तन करके ही उत्पादन में बदलाव ला सकती हैं।**
- कंपनियां अल्पावधि में **असाधारण लाभ, सामान्य लाभ या हानि अर्जित कर सकती हैं।**
  "अल्पावधि में, पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत एक फर्म लाभ या हानि कमा सकती है, लेकिन दीर्घावधि में केवल सामान्य लाभ ही बना रहता है।" - ए. मार्शल

II. मूल्य-ग्रहण व्यवहार और राजस्व स्थितियाँ

A. राजस्व संबंध

पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत:

$$AR = MR = P$$

फर्म को बाजार-निर्धारित मूल्य पर

क्षैतिज मांग वक्र का सामना करना पड़ता है। → फर्म प्रचलित मूल्य पर कोई भी मात्रा बेच सकती है लेकिन उच्च मूल्य पर कुछ भी नहीं बेच सकती।

B. संतुलन की स्थिति

एक फर्म **अल्पावधि संतुलन तब प्राप्त करती है** जब:

$$MR = MC$$

और

MC cuts MR from below

- **आवश्यक शर्त:** MR = MC
- **पर्याप्त स्थिति:** MC का ढलान > MR का ढलान (बढ़ता MC)

III. फर्म का संतुलन उत्पादन निर्धारण

कदम	स्पष्टीकरण
1.	बाजार मांग-आपूर्ति के माध्यम से संतुलन मूल्य (P_e) निर्धारित करता है।
2.	फर्म P_e को दिए गए अनुसार स्वीकार करती है → क्षैतिज AR = MR = P रेखा।
3.	फर्म उत्पादन करती है जहां MR = MC.
4.	AR और AC के बीच का संबंध लाभ/हानि निर्धारित करता है।

IV. किसी फर्म के लिए संभावित अल्पकालिक स्थितियाँ

मामला	स्थिति	लाभ की प्रकृति	आरेख विवरण
1. असाधारण लाभ	एआर > एसी	फर्म ने सामान्य स्तर से अधिक लाभ अर्जित किया	संतुलन बिंदु पर AC वक्र के ऊपर मूल्य रेखा (AR=MR)
2. सामान्य लाभ	एआर = एसी	फर्म अवसर लागत सहित सभी लागतों को कवर करती है	AR=MR न्यूनतम बिंदु पर AC वक्र के स्पर्शरेखीय
3. हानि / असामान्य लाभ	एआर < एसी	फर्म को घाटा होता है लेकिन यदि AR > AVC हो तो कंपनी जारी रहती है	मूल्य रेखा AC से नीचे लेकिन AVC से ऊपर

V. केस 1 - अलौकिक लाभ

A. स्थिति

$AR > AC$ at equilibrium output

B. स्पष्टीकरण

- फर्म का कुल राजस्व (टीआर) कुल लागत (टीसी) से अधिक है।
- लाभ आयत का क्षेत्रफल = (AR - AC) × आउटपुट (Q).

C. आरेख विवरण

- X-अक्ष: आउटपुट
- Y-अक्ष: लागत/राजस्व
- क्षैतिज रेखा = AR = MR = मूल्य (P_1)
- MC, MR को साम्यावस्था E पर प्रतिच्छेदित करती है।
- एसी वक्र मूल्य रेखा के नीचे स्थित है → लाभ क्षेत्र छायांकित है।

लाभ क्षेत्र = P_1 EAB

VI. केस 2 - सामान्य लाभ

A. स्थिति

$AR = AC$ at equilibrium output

B. स्पष्टीकरण

- फर्म सभी स्पष्ट + अंतर्निहित लागतों को कवर करने के लिए पर्याप्त कमाती है।
- अल्पावधि में प्रवेश या निकास के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं।
- संतुलन स्थिर.

C. आरेख विवरण

- AR = MR = P बिंदु E पर AC की स्पर्शरेखा (MC = MR = ACmin)।
- कोई छायांकित लाभ या हानि क्षेत्र नहीं।

VII. केस 3 - हानि या असामान्य लाभ

A. स्थिति

$$AR < AC \text{ but } AR > AVC$$

B. स्पष्टीकरण

- फर्म परिवर्तनीय लागत को कवर करती है लेकिन कुल लागत को नहीं।
- उत्पादन जारी है क्योंकि निश्चित लागत का भुगतान तो करना ही होगा।
- यदि AR < AVC → फर्म बंद हो जाएगी (शटडाउन बिंदु)।

C. आरेख विवरण

- AR = MR रेखा AC के नीचे लेकिन AVC के ऊपर।
- हानि = AR और AC के बीच छायांकित आयत।

VIII. शटडाउन पॉइंट

A. परिभाषा

- वह बिंदु जिसके नीचे फर्म **उत्पादन बंद कर देती है** क्योंकि वह परिवर्तनीय लागतों को भी कवर नहीं कर पाती।

B. स्थिति

$$AR = AVC \quad \text{or} \quad P = AVC$$

- इस मूल्य से नीचे, हानियाँ निश्चित लागत से अधिक हो जाती हैं → पूर्ण बंद।

C. लागत वक्र और संतुलन के बीच संबंध

वक्र	व्यवहार	संतुलन में भूमिका
एम सी	यू आकार	एमआर के साथ संतुलन निर्धारित करता है
एसी	यू आकार	लाभ/हानि परिणाम को परिभाषित करता है
एवीसी	यू आकार	शटडाउन बिंदु निर्धारित करता है
एमआर (एआर = पी)	क्षैतिज	बाजार मूल्य स्तर को इंगित करता है

X. अल्पावधि में फर्म का आपूर्ति वक्र

A. परिभाषा

- **AVC के ऊपर MC वक्र का भाग** अल्पावधि में फर्म के आपूर्ति वक्र का निर्माण करता है।
- AVC से नीचे → फर्म बंद हो जाती है।

$$S_{firm} = MC \text{ above AVC}$$

B. उद्योग आपूर्ति वक्र

- व्यक्तिगत फर्म आपूर्ति वक्रों का क्षैतिज योग।

XI. अल्पावधि में उद्योग संतुलन

स्थिति	स्पष्टीकरण
सभी फर्म संतुलन में हैं (MC=MR)	प्रत्येक फर्म दिए गए बाजार मूल्य पर उत्पादन करती है।
कुछ फर्में असाधारण लाभ या हानि अर्जित करती हैं	सभी के लिए कीमत निश्चित है; कम्पनियों की लागत शर्तें अलग-अलग होती हैं।
उद्योग संतुलन अभी तक हासिल नहीं हुआ है	प्रवेश/निकास तुरंत संभव नहीं है।

परिणाम: अल्पावधि में, उद्योग की आपूर्ति मूल्य निर्धारित करने के लिए बाजार की मांग के अनुसार समायोजित होती है, लेकिन सभी कंपनियां समान लाभ नहीं कमाती हैं।

XII. ग्राफिकल एकीकरण

- **पैनल ए: डी = एस** → मूल्य पी $_e$ पर उद्योग संतुलन ।
- **पैनल बी:** फर्म का संतुलन → MC = MR = P $_e$.
- **परिणाम:** लाभ/हानि का निर्धारण AR और AC की सापेक्ष स्थिति द्वारा किया जाता है।

XIII. PYQ ट्रिगर पॉइंट

1. पूर्ण प्रतिस्पर्धा के तहत फर्म के लिए संतुलन की स्थिति? → MR = MC.
2. फर्म का अल्पावधि आपूर्ति वक्र? → AVC से ऊपर MC.
3. शटडाउन बिंदु पर, क्या किसके बराबर होता है? → AR = AVC.
4. असाधारण लाभ संभव है? → केवल अल्पावधि में।
5. संतुलन में, कीमत बराबर होती है? → MR = MC = AR.
6. फर्म घाटे के बावजूद कब जारी रहती है? → AR > AVC परंतु < AC.

XIV. आलोचनात्मक मूल्यांकन

A. ताकत

- प्रतिस्पर्धी फर्मों के वास्तविक अल्पकालिक व्यवहार को दर्शाता है।
- मूल्य-उत्पादन समायोजन तंत्र की व्याख्या करता है।
- दीर्घकालिक संतुलन विश्लेषण के लिए आधार प्रदान करता है।

B. सीमाएँ

- समान लागत स्थितियों को मानता है।
- नवाचार, पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं की अनदेखी करता है।
- पूर्ण जानकारी और गतिशीलता की अवास्तविक धारणा।

XV. सारांश एकीकरण

- **अल्पावधि** में , एक पूर्णतः प्रतिस्पर्धी फर्म **असाधारण लाभ, सामान्य लाभ या हानि का अनुभव कर सकती है** , लेकिन जब तक **AR ≥ AVC रहता है, तब तक उत्पादन जारी रखती है** ।
- **संतुलन MR = MC** पर होता है , जो इष्टतम आउटपुट निर्धारित करता है।
- **दीर्घकालिक संतुलन** की नींव रखता है , जहां मुक्त प्रवेश और निकास के कारण केवल **सामान्य लाभ ही बचता है।**

संपूर्ण प्रतियोगिता: फर्म और उद्योग का दीर्घकालिक संतुलन

I. प्रस्तावना

A. दीर्घकाल का अर्थ

- दीर्घकाल **वह** अवधि है जिसमें **उत्पादन के सभी कारक परिवर्तनशील होते हैं** ।
- कंपनियां **संयंत्र के आकार को समायोजित कर सकती हैं** , उद्योग में **प्रवेश कर सकती हैं या बाहर निकल सकती हैं , तथा पूर्ण संतुलन प्राप्त कर सकती हैं ,** जहां **केवल सामान्य लाभ ही** प्रचलित हो।
- सभी समायोजन - कारक मूल्य, उत्पादन स्तर और फर्म संख्या - पूर्ण हो चुके हैं।
  "दीर्घकाल में, पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत, प्रत्येक फर्म केवल सामान्य लाभ अर्जित करती है और अपनी दीर्घकालीन औसत लागत के न्यूनतम बिंदु पर कार्य करती है।" - ए. मार्शल

II. दीर्घकालिक मान्यताएँ

स्थिति	स्पष्टीकरण
सभी कारक परिवर्तनशील हैं	कंपनियां अपने परिचालन के पैमाने में परिवर्तन कर सकती हैं।
निःशुल्क प्रवेश और निकास	यदि लाभ हो तो कंपनियां प्रवेश करती हैं, यदि हानि बनी रहती है तो कंपनियां बाहर निकल जाती हैं।
उत्तम ज्ञान और गतिशीलता	संसाधन सबसे कुशल उपयोगों की ओर बढ़ते हैं।
समान लागत की स्थितियाँ	प्रत्येक फर्म को एक ही दीर्घावधि लागत वक्र का सामना करना पड़ता है।
बाह्य मितव्ययिताओं/अमितव्ययिताओं का अभाव	स्थिर लागत उद्योग धारणा (मूल मॉडल में)।

III. दीर्घावधि में फर्मों के उद्देश्य

1. **लाभ अधिकतमीकरण:** MR = MC.
2. **लागत न्यूनीकरण:** न्यूनतम एलएसी पर परिचालन।
3. **सामान्य लाभ:** TR = TC (अवसर लागत शामिल है).
4. **संतुलन स्थिरता:** प्रवेश या निकास के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं।

IV. संतुलन की स्थितियाँ

A. फर्म का संतुलन

1. **आवश्यक शर्त:**

$$MR = MC$$

2. **पर्याप्त स्थिति:**

MC cuts MR from below

3. **लाभ की स्थिति:**

$$AR = AC$$

केवल सामान्य लाभ (टीआर = टीसी)।

B. उद्योग का संतुलन

1. सभी फर्म संतुलन में हैं (MC = MR)।
2. प्रवेश या निकास के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं।
3. उद्योग उत्पादन स्थिर, मूल्य स्थिर।

V. दीर्घकालिक समायोजन की प्रक्रिया

A. केस 1: असाधारण लाभ अर्जित करने वाली फर्में

- नए प्रवेशकों को आकर्षित करता है → उद्योग आपूर्ति बढ़ जाती है → कीमत गिर जाती है → लाभ समाप्त हो जाता है।
- **AR = AC** तक प्रविष्टि जारी रहती है ।

B. केस 2: घाटे में चल रही फर्में

- घाटे में चल रही कंपनियाँ बाहर निकलें → आपूर्ति घटे → कीमत बढ़े → हानि समाप्त हो गई।
- निकास **AR = AC तक जारी रहता है** ।
  परिणाम: दीर्घावधि संतुलन → सामान्य लाभ (कोई प्रवेश/निकास दबाव नहीं)।

VI. दीर्घकालीन संतुलन का ग्राफिकल विश्लेषण

A. उद्योग (बाएं पैनल):

- बाजार मांग (डी) और आपूर्ति (एस)।
- संतुलन मूल्य P_LD = S पर निर्धारित किया गया।

B. फर्म (दायां पैनल):

- AR = MR = P रेखा क्षैतिज पर P_L.
- फर्म की LAC स्पर्शरेखा AR रेखा के न्यूनतम बिंदु (E) पर है।
- एलएमसी = एमआर = एआर = एलएसीमिन → **संतुलन आउटपुट Q $_e$** .

C. व्याख्या

- कोई लाभ या हानि नहीं (AR = AC).
- फर्म न्यूनतम संभव लागत पर उत्पादन करती है।
- आवंटनात्मक एवं उत्पादक दक्षता प्राप्त हुई।

VII. दीर्घकालीन संतुलन स्थितियाँ (गणितीय सारांश)

प्रतीक	स्थिति
संतुलन आउटपुट	एमआर = एमसी
सामान्य लाभ	एआर = एसी
क्षमता	एमसी = एसी = एआर
स्थिरता	प्रवेश/निकास प्रोत्साहन नहीं

$$P = MR = AR = LMC = LAC_{min}$$

VIII. दीर्घकालिक आपूर्ति और लागत उद्योग

उद्योग का प्रकार	लागत व्यवहार	एलआरएस वक्र	स्पष्टीकरण
स्थिर-लागत उद्योग	इनपुट कीमतें स्थिर	क्षैतिज	प्रवेश/निकास लागत को प्रभावित नहीं करता
बढ़ती लागत वाला उद्योग	विस्तार के साथ इनपुट की कीमतें बढ़ीं	ऊपर की ओर ढलान	कारकों की कमी
घटती लागत वाला उद्योग	पैमाने की अर्थव्यवस्थाएं इनपुट लागत को कम करती हैं	नीचे झुका हुआ	बाहरी अर्थव्यवस्थाएं हावी हैं

A. स्थिर-लागत उद्योग

- उदाहरण: लघु-स्तरीय कृषि।
- प्रवेश/निकास लागत अपरिवर्तित रहती है।
- दीर्घावधि मूल्य स्थिरांक → क्षैतिज एलआरएस।

B. बढ़ती लागत वाला उद्योग

- उदाहरण: खनन, ऊर्जा क्षेत्र।
- उद्योग के विस्तार के साथ कारक कीमतें बढ़ती हैं।
- एलआरएस का ढलान ऊपर की ओर है।

C. घटती लागत वाला उद्योग

- उदाहरण: उच्च तकनीक, ज्ञान-आधारित क्षेत्र।
- तकनीकी बाह्य अर्थव्यवस्थाएं → गिरती लागत।
- एलआरएस नीचे की ओर झुका हुआ।

IX. उद्योग का दीर्घकालिक आपूर्ति वक्र

LRS = Envelope of short-run supply curves (SRS)

- विभिन्न मांग स्तरों पर दीर्घकालिक संतुलन बिंदुओं को जोड़कर व्युत्पन्न।
- ढलान उद्योग लागत स्थिति द्वारा निर्धारित किया जाता है।

X. दक्षता निहितार्थ

प्रकार	स्थिति	दक्षता स्थिति
आवंटन दक्षता	पी = एमसी	संसाधनों का इष्टतम उपयोग
उत्पादक क्षमता	एसी मिनट	कंपनियाँ न्यूनतम लागत पर उत्पादन करती हैं
गतिशील दक्षता	नवाचार प्रोत्साहन	कमज़ोर (सामान्य लाभ के कारण)
सामाजिक दक्षता	कोई मृतभार हानि नहीं	कल्याण अधिकतम

XI. कल्याण विश्लेषण

- **उपभोक्ता अधिशेष:** अधिकतम (न्यूनतम संभव मूल्य).
- **उत्पादक अधिशेष:** केवल सामान्य लाभ (कोई शोषण नहीं)।
- **सामाजिक कल्याण:** अधिकतम → पेरेटो इष्टतम संतुलन।

XII. दीर्घकालीन समायोजन पथ का सारांश

अवस्था	परिस्थिति	बाजार प्रतिक्रिया	नतीजा
1	असाधारण लाभ	नई फर्मों का प्रवेश	कीमत ↓ , लाभ → सामान्य
2	सामान्य लाभ	प्रवेश या निकास निषेध	दीर्घकालिक संतुलन
3	नुकसान	फर्मों का निकास	मूल्य ↑ , हानि समाप्त

XIII. दीर्घकालीन संतुलन आरेख सारांश (संकल्पनात्मक)

- **बायां पैनल:** बाजार डी और एस प्रतिच्छेद → मूल्य पी $_e$ ।
- **दायां पैनल:** फर्म का AR = MR = P रेखा LACmin की स्पर्शज्या → संतुलन आउटपुट Q $_e$.
- लाभ/हानि का कोई क्षेत्र नहीं।
- दीर्घकालिक स्थिरता प्राप्त हुई।

XIV. PYQ ट्रिगर पॉइंट

1. पूर्ण प्रतिस्पर्धा के तहत दीर्घकालिक संतुलन में :
2. P = MR = MC = AC = LACmin ।
3. केवल सामान्य लाभ के लिए कारण? → प्रवेश और निकास निःशुल्क ।
4. स्थिर लागत उद्योग में दीर्घावधि आपूर्ति वक्र का आकार? → क्षैतिज।
5. आवंटन दक्षता की स्थिति? → P = MC.
6. दीर्घकालिक संतुलन सुनिश्चित करता है? → उत्पादक और आवंटन दक्षता।
7. संतुलन पर, फर्म कहाँ संचालित होती है? → LAC का न्यूनतम बिंदु।

XV. आलोचनात्मक मूल्यांकन

A. ताकत

- संसाधन आवंटन और लागत समायोजन की व्याख्या करता है।
- प्रतिस्पर्धी बाजारों की स्व-सही प्रकृति को प्रदर्शित करता है।
- अधिकतम सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करता है।

B. सीमाएँ

- अवास्तविक धारणाएँ (एकरूपता, पूर्ण ज्ञान)।
- नवाचार या अनुसंधान एवं विकास की कोई भूमिका नहीं।
- बाह्य कारकों और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा की अनदेखी करता है।

XVI. सारांश एकीकरण

- **दीर्घकालीन पूर्ण प्रतियोगिता** में , प्रत्येक फर्म वहां कार्य करती है जहां **P = MC = MR = LACmin होता है** , तथा केवल **सामान्य लाभ अर्जित करती है** ।
- यह **स्थैतिक दक्षता को दर्शाता है - एकाधिकार, एकाधिकारवादी और अल्पाधिकार** परिणामों की तुलना करने के लिए एक मानक।
- उद्योग **संसाधनों का इष्टतम आवंटन** और **अधिकतम सामाजिक कल्याण प्राप्त करता है, लेकिन शून्य गतिशील दक्षता** (कोई नवाचार प्रोत्साहन नहीं) की कीमत पर ।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत तुलनात्मक आँकड़े: बाजार के झटके और समायोजन तंत्र

I. प्रस्तावना

A. तुलनात्मक स्थैतिकी का अर्थ

- **तुलनात्मक सांख्यिकी** किसी भी पैरामीटर जैसे मांग, आपूर्ति, लागत या प्रौद्योगिकी में **बाह्य परिवर्तन (झटका) के बाद** बाजार या फर्म की संतुलन स्थिति में परिवर्तन का अध्ययन करती है ।
- यह **समायोजन के मार्ग का विश्लेषण नहीं करता है** , बल्कि **प्रारंभिक और नए संतुलन की तुलना करता है** ।
  "तुलनात्मक स्थैतिकी अंतर्निहित स्थितियों में परिवर्तन के कारण उत्पन्न विभिन्न संतुलन स्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित है।" - जेआर हिक्स

II. पद्धतिगत स्थिति

अवधारणा	स्थिर	तुलनात्मक स्थैतिक	गतिशील
अर्थ	एकमुश्त संतुलन	दो संतुलनों के बीच तुलना	समय के साथ समायोजन प्रक्रिया
केंद्र	एकल राज्य	संतुलन अवस्थाओं में परिवर्तन	समय पथ और प्रक्रिया
उदाहरण	निश्चित मांग-आपूर्ति	मांग वक्र में बदलाव	आपूर्ति का विलंबित समायोजन

सूत्रीय प्रतिनिधित्व:

$$\frac{\Delta E}{\Delta X} \text{ where } E = \text{equilibrium variable, } X = \text{determinant}$$

III. पूर्ण प्रतियोगिता के लिए प्रयोज्यता

तुलनात्मक सांख्यिकी का व्यापक रूप से **पूर्ण प्रतिस्पर्धा में** अध्ययन के लिए उपयोग किया जाता है:

1. **मांग या आपूर्ति** में परिवर्तन .
2. **तकनीकी प्रगति या कराधान** के प्रभाव .
3. दीर्घावधि और अल्पावधि संतुलन समायोजन।
4. झटकों के कल्याणकारी निहितार्थ।

IV. अल्पावधि बनाम दीर्घावधि तुलनात्मक सांख्यिकी

निर्धारित समय - सीमा	प्रमुख विशेषताऐं	चर निश्चित	परिणामी समायोजन
अल्पावधि	आंशिक समायोजन; कुछ इनपुट ठीक किए गए	पौधे का आकार	मूल्य और लाभ अस्थायी रूप से बदलते हैं
आगे जाकर	सभी कारक परिवर्तनशील; पूर्ण प्रवेश/निकास	कोई नहीं	कीमत सामान्य लाभ स्तर पर लौटती है

V. मांग में परिवर्तन में तुलनात्मक सांख्यिकी

A. अल्पावधि मांग में वृद्धि

1. **मांग वक्र दाईं ओर खिसकता है (D $_1$ → डी$_2$)** .
2. कीमत अस्थायी रूप से बढ़ जाती है (P $_0$ → पी $_1$).
3. फर्में **असाधारण लाभ अर्जित करती हैं** (AR > AC).
4. उद्योग उत्पादन में थोड़ी वृद्धि हुई है।
5. बाजार अभी भी दीर्घकालिक संतुलन में नहीं है।

ग्राफ सारांश:

- बायां पैनल: बाजार डी शिफ्ट → पी ↑ ।
- दायां पैनल: फर्म की AR = MR रेखा बढ़ती है → असाधारण लाभ क्षेत्र।

B. दीर्घकालिक समायोजन

1. असाधारण लाभ नई फर्मों को आकर्षित करता है → उद्योग की आपूर्ति बढ़ जाती है।
2. आपूर्ति वक्र दाईं ओर खिसकता है (S $_1$ → एस $_2$).
3. कीमत मूल स्तर पर वापस आ जाती है (यदि स्थिर लागत वाला उद्योग हो)।
4. **अधिक कुल उत्पादन** , **सामान्य लाभ** और **कम कीमत** (घटती लागत वाले उद्योगों में) के साथ नया संतुलन ।

परिणाम:

$$P_{SR} > P_{LR}, \quad Q_{SR} < Q_{LR}$$

VI. आपूर्ति परिवर्तनों में तुलनात्मक सांख्यिकी

A. आपूर्ति में अल्पकालिक कमी

- आपूर्ति वक्र बाईं ओर खिसकता है (S $_1$ → एस $_2$).
- बाजार मूल्य में वृद्धि (P $_0$ → पी $_1$).
- कंपनियां अस्थायी रूप से **असाधारण लाभ कमाती हैं** ।

B. दीर्घकालिक परिणाम

- फर्मों का प्रवेश (यदि लाभ हो) → आपूर्ति पुनः बढ़े → कीमत सामान्य हो जाए।
- यदि हानि होती है (उच्च लागत के कारण), तो बाहर निकलें → आपूर्ति अनुबंध → बहाल सामान्य लाभ के साथ नया संतुलन।

VII. तकनीकी प्रगति में तुलनात्मक स्थैतिकी

अवधि	लागत और संतुलन पर प्रभाव
अल्पावधि	लागत में कमी से MC, AC नीचे की ओर खिसक जाता है → फर्म असाधारण लाभ अर्जित करती है।
आगे जाकर	नए प्रवेशकर्ता उन्नत प्रौद्योगिकी अपनाते हैं → उद्योग आपूर्ति बढ़ती है → कीमत गिरती है, सामान्य लाभ बहाल होता है।

ग्राफिकल विवरण:

- एलएसी नीचे की ओर खिसकती है → मूल्य रेखा के साथ नई स्पर्शरेखा निम्न P और उच्च Q पर।
- **परिणाम:** कल्याण में सुधार, दक्षता में वृद्धि।

VIII. कराधान और सब्सिडी का तुलनात्मक सांख्यिकी

नीति परिवर्तन	अल्पकालिक प्रभाव	दीर्घकालिक समायोजन
विशिष्ट कर (प्रति इकाई)	MC और AC में वृद्धि; कीमत बढ़ी; लाभ ↓	कम उत्पादन के साथ नया संतुलन
मूल्यानुसार कर (प्रतिशत)	AR, MR वक्र झुकाव; P ↑ , Q ↓	बाहर निकलने के बाद सामान्य लाभ बहाल
सब्सिडी	MC और AC को नीचे की ओर स्थानांतरित करता है; P ↓ , Q ↑	सामान्य लाभ बहाल होने तक अस्थायी लाभ में प्रवेश की अनुमति होती है

समीकरण:

$$P_{tax} = P_0 + \frac{\Delta MC}{E_s + E_d}$$

(जहाँ E_s, E_d आपूर्ति और मांग की लोच हैं)

IX. तुलनात्मक स्थैतिकी: चरणबद्ध समायोजन प्रक्रिया

कदम	बाजार की प्रतिक्रिया	दृढ़ प्रतिक्रिया	परिणाम
1	बाहरी झटका (D ↑ /S ↓ / लागत ↓)	मूल्य परिवर्तन	अस्थायी असंतुलन
2	कंपनियां उत्पादन समायोजित करती हैं	लाभ/हानि में परिवर्तन	प्रवेश या निकास
3	उद्योग आपूर्ति में परिवर्तन	कीमत सामान्य की ओर लौटती है	दीर्घकालिक संतुलन
4	सभी फर्म सामान्य लाभ अर्जित करती हैं	इष्टतम संसाधन आवंटन	अंतिम संतुलन अवस्था

X. तुलनात्मक स्थैतिक झटकों के प्रकार

प्रकार	उदाहरण	समायोजन की प्रकृति
बहिर्जात आघात	आय में वृद्धि के कारण मांग में परिवर्तन	बाहरी
नीतिगत झटका	कराधान, सब्सिडी, विनियमन	सरकार द्वारा प्रेरित
तकनीकी झटका	आविष्कार, उत्पादकता में परिवर्तन	आपूर्ति वाली साइड
लागत का झटका	कारक मूल्य परिवर्तन	उत्पादन की ओर

XI. ग्राफिकल चित्रण सारांश

A. प्रारंभिक संतुलन:
D_0 और S_0 प्रतिच्छेद करते हैं → P_0 , Q_0 .

B. सदमा:
मांग या आपूर्ति वक्र में बदलाव (उदाहरण के लिए, D_0 → डी $_1$).

C. अल्पावधि संतुलन:
अस्थायी मूल्य P_1 , मात्रा Q_1 (असामान्य लाभ/हानि)।

D. दीर्घकालिक संतुलन:
प्रवेश/निकास आपूर्ति → अंतिम P_2 , Q_2 को सामान्य लाभ के साथ समायोजित करता है।

XII. कल्याणकारी निहितार्थ

निर्धारित समय - सीमा	उपभोक्ता कल्याण	उत्पादक कल्याण	समग्र प्रभाव
अल्पावधि	↓ (उच्च कीमत)	↑ (लाभ प्राप्ति)	संक्रमणकालीन असंतुलन
आगे जाकर	↑ (कीमत गिरती है, उत्पादन बढ़ता है)	सामान्यीकृत	कुशल संतुलन बहाल

XIII. स्थिर, बढ़ती और घटती लागत वाले उद्योगों में तुलनात्मक सांख्यिकी

उद्योग का प्रकार	अल्पकालिक परिवर्तन	दीर्घकालिक परिणाम
लगातार लागत	अस्थायी मूल्य वृद्धि/गिरावट	प्रारंभिक मूल्य पर वापसी
बढ़ती लागत	कीमत स्थायी रूप से बढ़ जाती है	उच्च लागत संतुलन
घटती लागत	कीमत स्थायी रूप से गिरती है	कम लागत संतुलन

XIV. PYQ ट्रिगर पॉइंट

1. तुलनात्मक स्थैतिकी अध्ययन? → दो संतुलन अवस्थाओं के बीच परिवर्तन।
2. आधुनिक अर्थशास्त्र में सर्वप्रथम किसके द्वारा प्रयोग किया गया? → **हिक्स (1939)** .
3. जब अल्पावधि में मांग बढ़ती है, तो कीमत? → बढ़ती है → असाधारण लाभ।
4. स्थिर लागत उद्योग में, मांग बढ़ने के बाद दीर्घावधि कीमत? → अपरिवर्तित।
5. दीर्घकालीन पूर्ण प्रतिस्पर्धा में, संतुलन लाभ? → केवल सामान्य।
6. पूर्ण प्रतिस्पर्धा में सब्सिडी का प्रभाव? → कीमत गिरती है → उत्पादन में वृद्धि → दीर्घावधि सामान्य लाभ।

XV. आलोचनात्मक मूल्यांकन

ताकत:

- बाह्य झटकों के प्रति बाजार की प्रतिक्रिया की व्याख्या करता है।
- कल्याण एवं नीति विश्लेषण का आधार।
- स्थिर और गतिशील दृष्टिकोणों के बीच सेतु का काम करता है।

सीमाएँ:

- समय पथ और समायोजन गति की उपेक्षा करता है.
- इसमें सुगम प्रवेश-निकास और निरंतर प्रौद्योगिकी की बात कही गई है।
- अनिश्चितता, अपेक्षाओं और विलंबों की उपेक्षा करता है।

XVI. सारांश एकीकरण

- **तुलनात्मक सांख्यिकी,** यह अध्ययन करने के लिए एक विश्लेषणात्मक ढांचा प्रदान करती है कि प्रतिस्पर्धी बाजार किसी गड़बड़ी के बाद **किस प्रकार पुनः संतुलन स्थापित करते हैं ।**
- इस प्रक्रिया में **अल्पावधि असंतुलन (लाभ/हानि)** के बाद **दीर्घावधि समायोजन** (प्रवेश/निकास) शामिल होता है, जिससे **सामान्य लाभ बहाल होता है** ।
- यह पूर्ण प्रतिस्पर्धा की **स्व-सही प्रकृति को प्रदर्शित करता है** तथा कल्याण एवं नीति विश्लेषण के लिए आधारशिला रखता है।

एकाधिकार: अवधारणा, विशेषताएँ और प्रकार

I. प्रस्तावना

A. एकाधिकार का अर्थ

- एकाधिकार शब्द ग्रीक शब्दों से आया है: **' मोनोस ' (एकल)** + **' पोलीन ' (बेचना)** → "एकल विक्रेता।"
- एकाधिकार एक बाजार संरचना है जिसमें एक **एकल फर्म एक अद्वितीय उत्पाद का** उत्पादन और बिक्री करती है, जिसमें **कोई निकट विकल्प** और **प्रवेश के लिए महत्वपूर्ण बाधाएं नहीं होती हैं** ।
- एकाधिकारवादी **मूल्य निर्माता होता है** , मूल्य लेने वाला नहीं।
  "एकाधिकार बाजार संगठन का वह रूप है जिसमें किसी उत्पाद का एक ही उत्पादक या विक्रेता होता है जिसका कोई निकट विकल्प नहीं होता।" - ए. कौत्सोयियानिस

II. एकाधिकार की मूलभूत विशेषताएँ

विशेषता	स्पष्टीकरण
1. एकल विक्रेता और अनेक क्रेता	केवल एक उत्पादक ही सम्पूर्ण बाजार आपूर्ति को नियंत्रित करता है; उपभोक्ताओं की संख्या बहुत अधिक होती है।
2. कोई करीबी विकल्प नहीं	उत्पाद अद्वितीय है; उपभोक्ताओं के पास कोई विकल्प नहीं है (जैसे, पेटेंट दवाएं)।
3. मूल्य निर्माता	एकाधिकारी मांग को ध्यान में रखते हुए कीमत निर्धारित करता है; फर्म की मांग = बाजार की मांग।
4. प्रवेश में बाधाएँ	कानूनी, प्राकृतिक या तकनीकी कारणों से नई फर्मों का प्रवेश प्रतिबंधित है।
5. नीचे की ओर झुका हुआ मांग वक्र	अधिक बिक्री के लिए, एकाधिकारवादी को कीमत कम करनी होगी; इसलिए AR और MR दोनों में गिरावट आती है।
6. आपूर्ति पर नियंत्रण	उत्पादन स्तर और आपूर्ति की गई मात्रा पर पूर्ण नियंत्रण।
7. गैर-मूल्य प्रतिस्पर्धा अनुपस्थित	कोई प्रतिस्पर्धी नहीं; केवल एक ही फर्म का प्रभुत्व है।
8. दीर्घकालिक असामान्य लाभ	असाधारण लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा करने हेतु कोई नया प्रवेशक नहीं।

III. एकाधिकार बनाम पूर्ण प्रतिस्पर्धा

पहलू	संपूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार
फर्मों की संख्या	अनेक	एक
उत्पाद	सजातीय	अद्वितीय
मूल्य नियंत्रण	कोई नहीं	पूरा
प्रवेश बाधाएं	मुक्त	वर्जित
मांग वक्र	पूरी तरह से लोचदार	नीचे झुका हुआ
दीर्घकालिक लाभ	सामान्य	अलौकिक संभव
मांग की लोच	अनंत	परिमित (< ∞)
AR और MR संबंध	एआर = एमआर	एमआर < एआर
क्षमता	अधिकतम	उप-इष्टतम (कल्याण हानि)

IV. एकाधिकार के स्रोत या कारण

प्रकार	स्पष्टीकरण / उदाहरण
1. कानूनी एकाधिकार	कानून द्वारा संरक्षित (जैसे, पेटेंट, कॉपीराइट)।
2. प्राकृतिक एकाधिकार	प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण के कारण उत्पन्न होता है (जैसे, ओएनजीसी, डी बीयर्स)।
3. तकनीकी एकाधिकार	पैमाने की अर्थव्यवस्थाएं → एक फर्म कम लागत पर पूरे बाजार की आपूर्ति कर सकती है (उदाहरण के लिए, बिजली)।
4. स्वैच्छिक एकाधिकार	बाजार पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए कंपनियां स्वेच्छा से विलय करती हैं (उदाहरण के लिए, कार्टेल, ट्रस्ट)।
5. राज्य का एकाधिकार	उत्पादन/वितरण पर सरकार का अनन्य नियंत्रण (जैसे, रेलवे, डाक सेवाएं)।
6. फ्रैंचाइज़ी एकाधिकार	सरकार परिचालन का विशेष अधिकार प्रदान करती है (जैसे, मेट्रो रेल)।
7. पेटेंट एकाधिकार	आविष्कारकों को निश्चित अवधि के लिए संरक्षण (जैसे, फार्मास्युटिकल नवाचार)।

V. प्रवेश में बाधाएं

बाधा प्रकार	स्पष्टीकरण / उदाहरण
1. कानूनी बाधाएँ	पेटेंट, कॉपीराइट, लाइसेंसिंग आवश्यकताएँ।
2. पैमाने की अर्थव्यवस्थाएँ	लागत लाभ नए प्रवेशकों को हतोत्साहित करता है।
3. संसाधन स्वामित्व	दुर्लभ इनपुट (जैसे, हीरे की खदानें) पर विशेष नियंत्रण।
4. ब्रांड निष्ठा	स्थापित उपभोक्ता प्राथमिकता प्रतिस्पर्धा को सीमित करती है।
5. रणनीतिक बाधाएं	लूटने वाला मूल्य निर्धारण, सीमा मूल्य निर्धारण, उच्च पूंजी आवश्यकताएं।
6. सरकारी नियम	रक्षा, सार्वजनिक उपयोगिताओं में एकाधिकार।

VI. एकाधिकार के प्रकार

प्रकार	आधार	उदाहरण / प्रकृति
1. शुद्ध एकाधिकार	एकल विक्रेता, कोई विकल्प नहीं	भारतीय रेल
2. भेदभावपूर्ण एकाधिकार	विभिन्न बाज़ारों के लिए अलग-अलग कीमतें	एयरलाइंस, बिजली
3. कानूनी एकाधिकार	कानून/पेटेंट द्वारा स्थापित	राज्य विद्युत बोर्ड
4. प्राकृतिक एकाधिकार	बड़े पैमाने पर संचालन से लागत लाभ	बिजली, पानी की आपूर्ति
5. निजी एकाधिकार	व्यक्तियों के स्वामित्व में	माइक्रोसॉफ्ट (सॉफ्टवेयर)
6. सार्वजनिक एकाधिकार	सरकारी स्वामित्व वाली	बीएसएनएल, एलआईसी
7. सरल एकाधिकार	सभी के लिए एक समान मूल्य	स्थानीय उपयोगिता आपूर्तिकर्ता
8. जटिल एकाधिकार	मूल्य भेदभाव का अभ्यास	अंतर्राष्ट्रीय मूल्य निर्धारण नीतियां

VII. एकाधिकार के तहत राजस्व व्यवहार

A. मांग (AR) और सीमांत राजस्व (MR) संबंध

1. **एआर** = औसत राजस्व = मूल्य वक्र (नीचे की ओर झुका हुआ)।
2. **MR** < **AR** क्योंकि अतिरिक्त इकाइयों को बेचने के लिए कीमत कम करनी होगी।
3. **संबंध:**

$$MR = AR(1 - \frac{1}{E_d})$$

कहाँ E_d = मांग की लोच.

लोच	रिश्ता	एमआर साइन
$E_d > 1$	एमआर पॉजिटिव	लोचदार सीमा
$E_d = 1$	एमआर = 0	टीआर अधिकतम
$E_d < 1$	एमआर नकारात्मक	अप्रत्यास्थ परास

VIII. मांग और MR वक्र का आकार

- **एआर (मांग वक्र):** नीचे की ओर झुका हुआ सीधा या उत्तल वक्र।
- **एमआर वक्र: यह** एआर के नीचे स्थित होता है तथा एक्स-अक्ष को मूल बिंदु तथा एआर के स्पर्श बिंदु के बीच में काटता है (यदि एआर रैखिक हो)।
- **टीआर वक्र:** उल्टा यू-आकार (बढ़ता है , अधिकतम होता है, फिर गिरता है)।

ग्राफिकल विवरण:

- X-अक्ष: आउटपुट
- Y-अक्ष: मूल्य/राजस्व
- MR, AR से पहले x-अक्ष को काटता है; मात्रा बढ़ने पर AR और MR के बीच का अंतर बढ़ता जाता है।

IX. मूल्य और उत्पादन निर्धारण की प्रकृति (अवलोकन)

- मूल्य और उत्पादन पूरी तरह से एकाधिकारवादी की पसंद से निर्धारित होता है।
- संतुलन प्राप्त हुआ जहां **MR = MC** .
- लाभ/हानि AR-AC संबंध द्वारा निर्धारित।
- पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में कीमत हमेशा **अधिक** और उत्पादन **कम होता है ।**

X. कल्याण और दक्षता निहितार्थ

मापदंड	**संपूर्ण प्रतियोगिता**	**एकाधिकार**
आवंटन दक्षता	पी = एमसी	P > MC (अकुशल)
उत्पादक क्षमता	न्यूनतम एसी	जरूरी नहीं कि हासिल हो
गतिशील दक्षता	कम	उच्च (नवाचार प्रोत्साहन)
उपभोक्ता अधिशेष	अधिकतम	कम किया हुआ
कुल भार नुकसान	कोई नहीं	वर्तमान (हारबर्गर त्रिकोण)

XI. वास्तविक दुनिया के उदाहरण

क्षेत्र	**उदाहरण**	**प्रकृति**
नैसर्गिक एकाधिकार	भारतीय रेलवे, एनटीपीसी	पैमाने की अर्थव्यवस्थाएं
कानूनी एकाधिकार	फार्मा पेटेंट (फाइजर, नोवार्टिस)	पेटेंट संरक्षण
सार्वजनिक एकाधिकार	राज्य विद्युत बोर्ड	सरकार विशेष
तकनीकी एकाधिकार	माइक्रोसॉफ्ट, गूगल सर्च	नेटवर्क प्रभाव

XII. PYQ ट्रिगर पॉइंट्स

1. एकाधिकार के तहत, AR और MR हैं? → नीचे की ओर झुका हुआ, MR < AR.
2. संतुलन की स्थिति? → MR = MC.
3. प्रवेश बाधा का कारण? → कानूनी और तकनीकी।
4. पेटेंट द्वारा निर्मित एकाधिकार का प्रकार? → कानूनी एकाधिकार।
5. MR पर लोच = 0? → Ed = 1.
6. एकाधिकार मूल्य अधिक क्यों है? → फर्म MR को MC के बराबर मानती है, P के बराबर नहीं।
7. एकाधिकार के अंतर्गत कल्याण हानि किसके द्वारा दर्शाई जाती है? → हर्बर्गर का त्रिकोण.

XIII. आलोचनात्मक मूल्यांकन

ताकत:

- असाधारण लाभ के माध्यम से नवाचार और अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करता है।
- पैमाने की अर्थव्यवस्थाएं प्राकृतिक एकाधिकार में दीर्घकालिक लागत को कम करती हैं।
- आवश्यक सेवाओं में विनाशकारी प्रतिस्पर्धा को रोका जा सकता है।

कमजोरियां:

- शोषणकारी मूल्य निर्धारण (पी > एमसी)।
- उत्पादन प्रतिबंध से कल्याण की हानि होती है।
- अकुशल संसाधन आवंटन.
- उपभोक्ता विकल्प की कमी और नवाचार में ठहराव (विनियमन के अभाव में)।

XIV. सारांश एकीकरण

- एकाधिकार **प्रतिस्पर्धा के पूर्ण अभाव** तथा एकल उत्पादक के हाथों में **सम्पूर्ण बाजार शक्ति को दर्शाता है।**
- एकाधिकारी का **मांग वक्र = AR वक्र नीचे की ओर झुका हुआ** है , जिससे **MR < AR होता है** ।
- **संतुलन की स्थिति:** MR = MC, लेकिन कीमत MC **से ऊपर निर्धारित की जाती है** → जिससे **आवंटन अक्षमता** और **कल्याण हानि होती है** ।
- आगामी चर्चा में हम आरेखों और कल्याण विश्लेषण के साथ **मूल्य और उत्पादन निर्धारण प्राप्त करेंगे।**

एकाधिकार: अल्पावधि और दीर्घावधि में मूल्य और उत्पादन का निर्धारण

I. प्रस्तावना

A. केंद्रीय समस्या

- एकाधिकारवादी **का** आपूर्ति और कीमत पर पूर्ण नियंत्रण होता है, लेकिन वह **दोनों को एक साथ नियंत्रित नहीं कर सकता** ।
- एकाधिकारवादी को **बाजार की मांग वक्र का सीधे सामना करना पड़ता है** (नीचे की ओर झुका हुआ), और उसे **मूल्य-उत्पादन संयोजन का चयन करना चाहिए** जो **लाभ को अधिकतम करता है** ।
  "एक एकाधिकारवादी लाभ को अधिकतम करता है जहाँ उसकी सीमांत लागत सीमांत राजस्व के बराबर होती है, न कि जहाँ कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है।" - ए.सी. पिगौ

II. मौलिक संतुलन स्थितियाँ

A. आवश्यक शर्त

$$MR = MC$$

B. पर्याप्त स्थिति

MC cuts MR from below (i.e., $dMC/dQ > dMR/dQ$)

C. लाभ की स्थिति

$AR > AC \Rightarrow$ Supernormal Profit

संतुलन **लाभ को अधिकतम करना सुनिश्चित करता है** (या **हानि को न्यूनतम करना** यदि AR < AC)।

II. अल्पावधि में मूल्य और उत्पादन निर्धारण

A. लघु-अवधि की विशेषताएं

- कम से कम एक कारक (जैसे, पौधे का आकार) निश्चित है।
- एकाधिकारवादी **असाधारण लाभ** , **सामान्य लाभ** या **हानि कमा सकता है** ।
- **बाधाओं** के कारण प्रतियोगियों का प्रवेश वर्जित ।

B. संतुलन विश्लेषण

चरण 1: बाजार की मांग निर्धारित करें → AR वक्र।
चरण 2: एमआर वक्र (एआर के नीचे) प्राप्त करें।
चरण 3: MC और AC वक्रों को अध्यारोपित करें।
चरण 4: वह बिंदु ज्ञात करें जहां MR = MC → संतुलन उत्पादन Q_E।
चरण 5: AR वक्र पर ऊर्ध्वाधर रेखा खींचें → मूल्य P_E निर्धारित करता है ।

C. ग्राफिकल स्पष्टीकरण

- **X-अक्ष:** आउटपुट (Q)
- **Y-अक्ष:** मूल्य / लागत / राजस्व
- **वक्र:**
  - एआर (मांग) - नीचे की ओर ढलान।
  - एमआर - तीव्र और एआर से नीचे।
  - एमसी - यू-आकार.
  - एसी - यू-आकार (लागत स्थिति के आधार पर एआर से ऊपर या नीचे)।

संतुलन बिंदु: E(एमआर = एमसी)
कीमत: P_E AR वक्र से.
आउटपुट : Q_E **लाभ/हानि:** (एआर - एसी) × क्यू .

D. अल्पकालिक संभावनाएँ

मामला	स्थिति	परिणाम
1. असाधारण लाभ	एआर > एसी	मूल्य > लागत → सकारात्मक लाभ
2. सामान्य लाभ	एआर = एसी	कोई आर्थिक लाभ नहीं, स्थिर संतुलन
3. हानि	AR < AC लेकिन AR > AVC	हानि न्यूनतम, फर्म जारी (परिवर्तनीय लागत को कवर करता है)

III. ई. अल्पकालिक आपूर्ति व्यवहार

- एकाधिकार में **कोई अद्वितीय आपूर्ति वक्र नहीं होता** , क्योंकि कीमत और उत्पादन मांग के साथ-साथ लागत पर भी निर्भर करते हैं।
- मूल्य किसी विशिष्ट आउटपुट के **अनुरूप नहीं होता** (पूर्ण प्रतिस्पर्धा के विपरीत)।
  एकाधिकार में **कोई आपूर्ति कार्य नहीं** होता है ।

ToppersNotes Unleash the topper in you

IV. दीर्घावधि में मूल्य और उत्पादन निर्धारण

A. दीर्घकालिक धारणाएँ

- सभी इनपुट परिवर्तनशील हैं।
- पौधे का आकार समायोजित किया जा सकता है।
- एकाधिकारवादी दीर्घकालिक लाभ को अधिकतम करने के लिए सबसे कुशल पैमाने का चयन करता है।
- **बाधाओं** के कारण कोई भी नई फर्म प्रवेश नहीं कर सकती ।

B. दीर्घकालिक संतुलन स्थिति

$$MR = LMC \quad \text{and} \quad LMC \text{ cuts MR from below.}$$

लाभ की स्थिति:

$$AR \geq LAC$$

C. दीर्घकालिक परिदृश्य

मामला	एआर-एसी संबंध	निहितार्थ
1. एआर > एसी	असाधारण लाभ अनिश्चित काल तक बना रहता है।	
2. एआर = एसी	सरकारी विनियमन या सामाजिक नियंत्रण से सामान्य लाभ संभव है।	
3. एआर < एसी	टिकाऊ नहीं → एकाधिकारवादी निकास (दुर्लभ)।	

D. ग्राफिकल चित्रण (दीर्घकालिक संतुलन)

- **वक्र :**
- एआर (मांग), एमआर, एलएमसी, एलएसी।
- **संतुलन:** MR = बिंदु E पर LMC → आउटपुट Q_e , कीमत P_e ।
- AR > LAC → लाभ क्षेत्र (P_e ABC).
- पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में कीमत अधिक और उत्पादन कम।

E. दीर्घकाल में एकाधिकारवादी का लाभ

लाभ अवधारणा	अभिव्यक्ति	अर्थ
असाधारण लाभ	$(AR - AC) \times Q_E$	बाधाओं के कारण दीर्घकालिक निरंतर लाभ
कुल लाभ	$TR - TC$	संतुलन आउटपुट पर AR और AC के बीच का क्षेत्र

V. तुलना: एकाधिकार बनाम पूर्ण प्रतिस्पर्धा (संतुलन परिणाम)

आधार	संपूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार
कीमत	पी = एमसी	पी > एमसी
उत्पादन	बड़ा	छोटे
लाभ (दीर्घावधि)	सामान्य	अलौकिक
क्षमता	आवंटनात्मक और उत्पादक	अप्रभावी
उपभोक्ता अधिशेष	अधिकतम	कम किया हुआ
कुल भार नुकसान	कोई नहीं	उपस्थित
संतुलन पर लोच	एड = ∞	एड > 1

VI. एकाधिकार के तहत कल्याण विश्लेषण

A. उपभोक्ता और उत्पादक अधिशेष

- **उपभोक्ता अधिशेष (सीएस)** ↓ (कीमत अधिक, मात्रा कम).
- **उत्पादक अधिशेष (PS)** ↑ (एकाधिकार लाभ के कारण).
- **शुद्ध कल्याण हानि (DWL):** MR, MC, और AR वक्रों के बीच डेडवेट त्रिकोण।

B. डेडवेट लॉस (हारबर्गर त्रिभुज)

$$\text{DWL} = \frac{1}{2}(P_M - P_C)(Q_C - Q_M)$$

कहाँ:

- P_M, Q_M = एकाधिकार मूल्य और उत्पादन.
- P_C, Q_C = प्रतिस्पर्धी मूल्य और उत्पादन.

प्रतिबंधित उत्पादन के कारण कुल कल्याण में हानि को दर्शाता है।